

स्पेशल रिपोर्ट: शक्त के पृथक्करण का सिद्धांत

भारतीय संविधान राज्य के प्रत्येक अंग की संरचना और भूमिका निर्धारित करता है साथ ही उनके कार्यों को परिभाषित करता है और उनके अंतर-संबंधों व नियंत्रण एवं संतुलन के लिये मानदंड स्थापित करता है।

- **शक्तियों के पृथक्करण के सिद्धांत** का अर्थ है कलोकतंत्र के प्रत्येक स्तंभ - कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका - अलग-अलग कार्य करते हैं एवं अलग-अलग संस्थाओं के रूप में कार्य करते हैं।

भारतीय संविधान के उद्देश्य क्या हैं?

संविधान देश का सर्वोच्च कानून है और यह समाज में अखंडता बनाए रखने एवं एक महान राष्ट्र बनाने के लिये नागरिकों के बीच एकता को बढ़ावा देने में मदद करता है।

- भारतीय संविधान का मुख्य उद्देश्य पूरे देश में सद्भाव को बढ़ावा देना है।
- इस उद्देश्य को प्राप्त करने में मदद करने वाले कारक हैं:
- **न्याय:** भारत के संविधान द्वारा प्रदान किये गए मौलिक अधिकारों और राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांतों के विभिन्न प्रावधानों के माध्यम से समाज में व्यवस्था बनाए रखने के लिये आवश्यक है। इसमें तीन तत्व शामिल हैं- सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक हैं।
 - **सामाजिक न्याय:** सामाजिक न्याय का अर्थ है कि संविधान जाति, पंथ, लिंग, धर्म आदि जैसे किसी भी आधार पर भेदभाव के बिना एक समाज बनाना चाहता है।
 - **आर्थिक न्याय:** आर्थिक न्याय का मतलब है कि लोगों द्वारा उनकी संपत्ति, आय और आर्थिक स्थिति के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जा सकता है। प्रत्येक व्यक्तिको समान पद के लिये समान वेतन दिया जाना चाहिए और सभी लोगों को अपनी जीविका कमाने के अवसर मिलने चाहिए। उदाहरण के लिये अनुच्छेद 39 (पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिये समान काम के लिये समान वेतन)।
 - **राजनीतिक न्याय:** राजनीतिक न्याय का अर्थ है कि सभी लोगों को बिना किसी भेदभाव के राजनीतिक अवसरों में भाग लेने का समान, स्वतंत्र और निष्पक्ष अधिकार है। उदाहरण के लिये, [अनुच्छेद 14-18 \(समानता अधिकार\)](#)।
- **समानता:** 'समानता' शब्द का अर्थ है कि समाज के किसी भी वर्ग के पास कोई विशेष विशेषाधिकार नहीं है और सभी लोगों को बिना किसी भेदभाव के हर चीज के लिये समान अवसर दिए गए हैं। कानून के समक्ष सभी समान हैं (अनुच्छेद 14)।
- **स्वतंत्रता:** 'लबिर्टी' शब्द का अर्थ है लोगों को अपने जीवन जीने का तरीका चुनने और समाज में राजनीतिक विचार और व्यवहार करने की स्वतंत्रता। स्वतंत्रता का अर्थ कुछ भी करने की स्वतंत्रता नहीं है, व्यक्ति कानून द्वारा निर्धारित सीमा के भीतर ही कुछ भी कर सकता है।
- **भाईचारा:** 'भाईचारा' शब्द का अर्थ है भाईचारे की भावना और देश व सभी लोगों के प्रति भावनात्मक लगाव। भाईचारा राष्ट्र में गरमा और एकता को बढ़ावा देने में मदद करता है।

शक्तियों के पृथक्करण का इतिहास क्या है?

- शक्तियों के पृथक्करण की अवधारणा पहली बार ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में अरस्तू के कार्यों में देखी गई थी जिसमें उन्होंने सरकार की तीन एजेंसियों को महासभा, सार्वजनिक अधिकारियों और न्यायपालिका के रूप में वर्णित किया था।
- प्राचीन रोमन गणराज्य में इसी तरह की अवधारणा का पालन किया गया था, जिसे 18 वीं शताब्दी के एक फ्रांसीसी सामाजिक और राजनीतिक दार्शनिक चार्ल्स लुइस डी सेकंड द्वारा गढ़ा गया था।
- उनका प्रकाशन "स्पिरिट ऑफ द लॉज" राजनीतिक सिद्धांत और न्यायशास्त्र के इतिहास में महान कार्यों में से एक माना जाता है। उनके विचारों का अमेरिकी संविधान के निर्माताओं पर गहरा प्रभाव पड़ा।
- उनके मॉडल के तहत राज्य के राजनीतिक अधिकार को विधायी, कार्यकारी और न्यायिक शक्तियों में विभाजित किया गया है। उन्होंने जोर देकर कहा कि लबिर्टी को सबसे प्रभावी ढंग से बढ़ावा देने के लिये इन तीन शक्तियों को अलग किया जाना चाहिए और स्वतंत्र रूप से काम करना चाहिए।

शक्तियों का पृथक्करण क्यों महत्वपूर्ण है?

- **शक्ति संकेंद्रण:** शक्तियों के पृथक्करण के सिद्धांत का क्लृप्ण एक हाथ (व्यक्ति) में शक्त के केंद्रीकरण को रोकने की कोशिश करता है क्योंकि इतिहास ने बार-बार प्रदर्शित किया है कि इससे वनिशकारी परिणाम हो सकते हैं।

- **पारदर्शिता:** इस सदिधांत का अनुप्रयोग सरकार को अपने कार्यों के लिये अपने नागरिकों के प्रति उत्तरदायी और जवाबदेह बनाता है जिससे मानवाधिकारों के प्रचार और संरक्षण में सहायता मिलती है।
- **अन्य प्रशासनों का उन्मूलन:** सत्ता का पृथक्करण प्रशासन के अन्य रूपों जैसे राजशाही या तानाशाही की सबसे गंभीर कमजोरियों में से एक को समाप्त करता है जिसमें राजा अपने लोगों के प्रति जवाबदेह नहीं होता है।
- **प्राकृतिक न्याय:** नमिनलखित सदिधांत सरकार के अंदर विभिन्न भागों का एक संतुलन बनाता है जिसमें सरकारी निकायों के कार्यों को एक दूसरे से अलग रहते हुए एक दूसरे द्वारा नियंत्रित किया जाता है, यह आश्वासन देता है कि कानून उचित है और प्राकृतिक न्याय का पालन करते हैं।

सरकार के तीन स्तंभ क्या हैं?

कार्यकारणी:

अध्यक्ष:

- राष्ट्रपति का चुनाव एक निर्वाचक मंडल के सदस्यों द्वारा किया जाता है जिसमें संसद के दोनों सदनों और राज्यों की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य शामिल होते हैं। यह चुनाव एकल संक्रमणीय वोट के माध्यम से आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के अनुसार होती है।
- संघ की कार्यकारी शक्ति राष्ट्रपति में निहित होती है और संविधान के अनुसार वह सीधे या अधीनस्थ अधिकारियों के माध्यम से इसका प्रयोग करता है।
- संघ के रक्षा बलों की सर्वोच्च कमान भी राष्ट्रपति के पास होती है।

उपाध्यक्ष:

- उपराष्ट्रपति का चुनाव एक निर्वाचक मंडल के सदस्यों द्वारा किया जाता है जिसमें एकल संक्रमणीय मत के माध्यम से आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के अनुसार संसद के दोनों सदनों के सदस्य शामिल होते हैं।
- वह कम-से-कम 35 वर्ष की आयु का भारत का नागरिक होना चाहिए और राज्य सभा के सदस्य के रूप में चुनाव के लिये योग्य होना चाहिए।
- उनके कार्यालय का कार्यकाल 5 वर्ष है और वह फिर से चुनाव के लिये पात्र है।
- वह राज्य सभा का पदेन अध्यक्ष भी होता है और जब राष्ट्रपति अनुपस्थिति, बीमारी या किसी अन्य कारण से अनुपस्थित होते हैं तो राष्ट्रपति के रूप में कार्य करता है या नए राष्ट्रपति के चुनाव तक अपने कार्यों का निर्वहन करने में असमर्थ होता है।

प्रधान मंत्री:

- प्रधान मंत्री की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है जो प्रधान मंत्री की सलाह पर अन्य मंत्रियों की भी नियुक्ति करता है।
- प्रधान मंत्री का यह कर्तव्य है कि वह संघ के मामलों के प्रशासन से संबंधित मंत्रपरिषद के सभी निर्णयों और कानून और संबंधित सूचनाओं के प्रस्तावों के बारे में राष्ट्रपति को सूचित करे।

मंत्रपरिषद (COM):

- राष्ट्रपति को उनके कार्यों के निष्पादन में सहायता और सलाह देने के लिये इसकी अध्यक्षता प्रधान मंत्री करते हैं।
- परिषद सामूहिक रूप से लोकसभा के प्रति उत्तरदायी होती है।
- कॉम में मंत्रियों की तीन श्रेणियाँ होती हैं, अर्थात् कैबिनेट मंत्री, राज्य मंत्री और उप मंत्री। इन सभी मंत्रियों में सबसे ऊपर प्रधानमंत्री होता है।

वधायिका (भारतीय संसद):

वधायिका के बारे में और कार्य:

- संसद भारत का सर्वोच्च वधायी निकाय है, जैसा कि अन्य संसदीय लोकतंत्रों में भारत में संसद के पास लोक शिकायतों के बजट वेंटलेशन को पारित करने और विकास योजनाओं, राष्ट्रीय नीतियों और अंतरराष्ट्रीय संबंधों जैसे विभिन्न विषयों पर चर्चा करने वाले प्रशासन की देखरेख करने वाले कानून का एक मुख्य कार्य है।
- संसद भारत की सर्वोच्च वधायी संस्था है। भारत में संसद के पास सार्वजनिक शिकायतों के बजट वेंटलेशन को पारित करने, विकास योजनाओं, राष्ट्रीय नीतियों और अंतरराष्ट्रीय संबंधों जैसे विभिन्न विषयों पर चर्चा करने, प्रशासन की देखरेख इत्यादि हेतु वधिबिनाने का एक प्रमुख कार्य है।
- यह एक ऐसी जगह है जहाँ वधिबनाए जाते हैं, देश के भविष्य पर बहस होती है और जनप्रतिनिधियों को जवाबदेह ठहराया जाता है। यह भारत के लोगों की स्वतंत्रता और संप्रभुता का जीवंत प्रतीक है।
- यह राष्ट्र की संवैधानिक संरचना में एक प्रतिष्ठित और महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

हटाने की शक्ति:

- संसद को राष्ट्रपति पर महाभियोग लगाने और संविधान में निरधारित प्रक्रिया के अनुसार सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों, मुख्य चुनाव आयुक्त और नियंत्रक और महालेखा परीक्षक को हटाने की शक्तियाँ निहित हैं।

